

## राजस्थान के खनिज संसाधनों का भौगोलिक अध्ययन

Dr. Pawan Kumar

Principal, Franklin girls college

Thalarka, (Hanumangarh) Rajasthan

### सार

राजस्थान राज्य, जो भारत के उत्तर-पश्चिमी भाग में स्थित है, प्राकृतिक संसाधनों से समृद्ध है, जो इसे राष्ट्र के खनन उद्योग में एक महत्वपूर्ण योगदानकर्ता बनाता है। राज्य की विविध चट्टान संरचनाओं के परिणामस्वरूप, राज्य का भूविज्ञान विभिन्न प्रकार के खनिज भंडारों की उपस्थिति से अलग है। राजस्थान राज्य कई महत्वपूर्ण खनिजों का घर है, जिनमें संगमरमर, चूना पत्थर, सीसा, जस्ता, जिप्सम और तांबा शामिल हैं। राजस्थान राज्य संगमरमर और बलुआ पत्थर का सबसे महत्वपूर्ण उत्पादक है, जिसमें मकराना संगमरमर सबसे प्रसिद्ध है। इसके अलावा, इसमें सीसा-जस्ता खनिजों के महत्वपूर्ण भंडार हैं, विशेष रूप से ज़ावर और राजपुरा-दरीबा बेल्ट में। इसके अलावा, थार रेगिस्तान क्षेत्र में विशाल जिप्सम भंडार हैं, जो सीमेंट निर्माण उद्योग का एक आवश्यक घटक हैं। रोजगार के अवसर प्रदान करना और औद्योगिक क्षेत्र के विस्तार में योगदान देना, राजस्थान में खनन उद्योग राज्य की अर्थव्यवस्था का एक आवश्यक घटक है। दूसरी ओर, खनन कार्य पर्यावरण संबंधी चिंताएँ पैदा कर सकते हैं, जैसे कि भूमि की गिरावट और पानी की सीमित उपलब्धता। राजस्थान में संसाधनों के दोहन और पर्यावरण के संरक्षण के बीच संतुलन बनाने के लिए, प्रभावी प्रबंधन और टिकाऊ तरीकों का होना बहुत ज़रूरी है।

**मुख्यशब्द:** खनिज संसाधन, चूना पत्थर, सीसा, जस्ता, जिप्सम

### परिचय

राजस्थान को 'खनिजों का संग्रहालय' माना जाता है। राजस्थान में भारत में खनिज भंडारों की एक विस्तृत श्रृंखला मौजूद है। खनिजों की उपलब्धता के मामले में राजस्थान का स्थान झारखंड के बाद दूसरे नंबर पर है। राजस्थान में कुल 79 खनिज पाए जाते हैं, जिनमें से 58 का व्यावसायिक दोहन किया जा रहा है। देश के कुल खनिज उत्पादन में इसकी हिस्सेदारी 9% है। राज्य गार्नेट, जैस्पर, सेलेनाइट और वोलेस्टोनाइट का एकमात्र उत्पादक है। सीसा-जस्ता, चांदी, कैडमियम, संगमरमर, कीमती और अर्ध-कीमती पत्थरों के उत्पादन में राज्य का एकाधिकार है। राज्य के कुछ अन्य महत्वपूर्ण खनिजों में तांबा, सिलिका और कार्बन, सीमेंट, अभ्रक, बेराइट्स, पायरोफाइलाइट, फ्लोराइट, ग्रेफाइट और बेंटोनाइट, एस्बेस्टस, चाइना क्ले, डोलोमाइट, मैग्नेसाइट, रॉक-फॉस्फेट, सोपस्टोन आदि शामिल हैं। कोयले और लौह-अयस्क की कमी ने न केवल अतीत में खनन उद्योगों में राज्य में बाधा डाली, बल्कि यह भविष्य में भी इसके विकास को प्रभावित करेगी। 2004-05 की कीमतों पर खनन क्षेत्र से आय 7,300 करोड़ रुपये थी, जो वर्ष 2011-12 के शुद्ध राज्य घरेलू उत्पादन का 3.70% थी। खनिज क्षेत्र द्वितीयक और तृतीयक क्षेत्रों में 5.06 लाख लोगों को प्रत्यक्ष रोजगार और 20 लाख से अधिक लोगों को अप्रत्यक्ष

रोजगार प्रदान करता है। राजस्थान राष्ट्रीय उत्पादन में 30% हिस्सेदारी का योगदान देकर लघु खनिजों के उत्पादन में पहले स्थान पर है। देश में उत्पादित प्रमुख खनिजों के मूल्य के मामले में राज्य 5वें स्थान पर है। पेट्रोलियम क्षेत्र ने राज्य को भारी राजस्व देना शुरू कर दिया है और 2014-15 में यह 5,300 करोड़ रुपये के स्तर को छू गया। नीचे दी गई तालिका राजस्थान में पाए जाने वाले खनिजों को दर्शाती है जो भारत के कुल उत्पादन का 70% या उससे अधिक हिस्सा हैं

### राजस्थान की भौगोलिक स्थिति:-

अध्ययन क्षेत्र राजस्थान की स्थिति 23:3' उत्तरी अक्षांश से 30:12' उत्तरी अक्षांश (अक्षांशीय विस्तार 79) तथा 69:30' पूर्वी देशान्तर से 78:17' पूर्वी देशान्तर (विस्तार 847) के मध्य स्थित राजस्थान का अधिकांश भाग कर्क रेखा (231/2' कर्क रेखा अर्थात् 230 30° उत्तरी अक्षांश रेखा के उत्तर में स्थित है। कर्क रेखा राज्य में डूंगरपुर जिले की दक्षिणी सीमा से होती हुई बाँसवाड़ा जिले के लगभग मध्य से गुजरती है। बाँसवाड़ा शहर कर्क रेखा से राज्य का सर्वाधिक नजदीक स्थित शहर है। जलवायु की दृष्टि से राज्य का अधिकांश भाग उपोष्ण या शीतोष्ण कटिबन्ध में स्थित है।

- उत्तर से दक्षिण तक लम्बाई 826 कि. मी. व विस्तार उत्तर में कोणा गाँव (गंगानगर) से दक्षिण में बोरकुण्ड गाँव (कुशलगढ़, बाँसवाड़ा) तक है।
- पूर्व से पश्चिम तक चौड़ाई 869 कि. मी. व विस्तार पूर्व में सिलाना गाँव (राजाखेड़ा, धौलपुर) से पश्चिम में कटरा (फतेहगढ़, सम, जैसलमेर) तक है।

### अध्ययन का उद्देश्य

1. राजस्थान में खनिजों के महत्व को समझाया गया है।
2. राजस्थान में खनिज आधारित उद्योगों की वर्तमान स्थिति की जानकारी प्राप्त करना।

### अध्ययन विधि:

प्रस्तुत शोध पत्र में प्राथमिक एवं द्वितीयक आकड़ों का प्रयोग किया गया है। प्राथमिक आँकड़ों का संकलन प्रश्नावली, साक्षात्कार, अनुसूची एवं व्यक्तिगत सम्पर्क से किया गया है। द्वितीयक आँकड़ों के संकलन डायरी, पत्र पत्रिकाओं, समाचार पत्र, राजस्थान खनिज निगम, पर्यावरण एवं खान विभाग, राजस्थान सरकार एवं विभिन्न वेबसाइट एवं पुस्तकों के माध्यम से किया गया है। इस अध्ययन की प्रकृति विवरणात्मक है।

### राजस्थान के खनिज संसाधन:

राजस्थान एक खनिज समृद्ध राज्य है। राजस्थान को "खनिजों का संग्रहालय" कहा जाता है। राजस्थान में लगभग 67 (44 हेड 23 माइनर) खनिजों का खनन किया जाता है। देश के कुल खनिज उत्पादन में राजस्थान का 22 प्रतिशत योगदान झारखंड के बाद, खनिज जमा के मामले में एक और स्थान है।

खनिज उत्पादन में कमी के कारण मध्य प्रदेश के बाद झारखंड का राजस्थान में तीसरा स्थान है। खनिज उत्पादन मूल्य के मामले में झारखंड, मध्य प्रदेश, गुजरात, असम के बाद राजस्थान का पांचवा स्थान है। राजस्थान में देश का सबसे अधिक भोजन होता है। राजस्थान भारत में लौह खनिजों में चौथे स्थान पर पहले स्थान पर है। राजस्थान में सबसे अधिक उपलब्ध खनिज रॉक फॉस्फेट है। राजस्थान एकमात्र राज्य है जो जैस्पर, बुलस्टोन और गारनेट सभी का उत्पादन करता है। राजस्थान में सीसा जस्ता, जिप्सम, चांदी, संगमरमर, अभ्रक, रॉक फॉस्फेट, इमली, पन्ना, जैस्पर, फायरक्ले, कैडमियम का एकाधिकार है। चूना पत्थर, टंगस्टन, अभ्रक, तांबा, फेल्सपार, लकड़ी में भारत में राजस्थान का महत्वपूर्ण स्थान है।

### राजस्थान के खान और खनिज संपदा: -

राजस्थान में, भौतिक दृष्टि से तीन मारू, मेरु और माल भू-आकृतियों का विशेष महत्व है। राजस्थान में अरावली क्षेत्र खनिज संसाधनों के मामले में समृद्ध है। गैर-धातु खनिजों और शक्ति के स्रोत पश्चिमी राजस्थान में पाए जाते हैं। पूर्वी राजस्थान में खनिज की कमी पाई जाती है। खान के मामले में राजस्थान पहले स्थान पर है। राजस्थान में सर्वाधिक 79 प्रकार के खनिज पाए जाते हैं। जिसमें 44 प्रकार के बड़े खनिज और 23 प्रकार के लघु खनिज और 12 अन्य छोटे खनिज पाए जाते हैं, इसलिए राजस्थान को खनिजों का संग्रहालय कहा जाता है। खनिज उत्पादन के मामले में राजस्थान भारत का तीसरा सबसे बड़ा राज्य है। (झारखंड और मध्य प्रदेश के बाद) खनिज संपदा के मामले में झारखंड के बाद राजस्थान का भारत में दूसरा स्थान है। खनिजों से आय के संदर्भ में, पांचवें स्थान पर गैर-लौह खनिज उत्पादन मूल्य में है और गैर-लौह उत्पादन में पहले स्थान पर है। देश के कुल खनिज उत्पादन में राज्य की हिस्सेदारी 22 प्रतिशत है। देश के कुल खनिजों में देश का 15% धात्विक, 25% अधात्विक और 26% गैर-धातु खनिज है। धात्विक और अधात्विक खनिज राजस्थान में पाए जाते हैं, लेकिन धात्विक खनिजों की कमी है। नागौर जिले में डेगाना (भाखरी) में एशिया की सबसे बड़ी टंगस्टन खदान है। राजस्थान के झुंझुनू को भारत का तांबा जिला कहा जाता है। राजस्थान के मकराना का संगमरमर (कैलिसिटिक प्रकार) विश्व प्रसिद्ध है। जिसका उपयोग ताज महल (आगरा) और विक्टोरिया मेमोरियल (कोलकाता) के निर्माण में किया गया है। राजस्थान में हीरा केसरपुरा (प्रतापगढ़) है, लेकिन वहां संभावनाएं व्यक्त की गई हैं। भारत की सबसे बड़ी खान रॉक फॉस्फेट झामर कोटरा (उदयपुर) में है।

भारत में सबसे अधिक सस्ता राजस्थान में पाया जाता है, राजस्थान में काला संगमरमर जयपुर भैंसलाना में पाया जाता है। तमदा उत्पादन में राजस्थान का एकाधिकार है। इसे लालमणि के नाम से जाना जाता है और तमरा उत्पादन में 'रक्तामणि' का राजस्थान में टोंक जिले में पहला स्थान है। राजस्थान के नागौर को राज्य का धातु शहर कहा जाता है। कपसन, चित्तौड़गढ़, कोटपुर झुंझुनू, उदयपुर, खिवसर, नागौर में अंजनी खेड़ा में चूना पत्थर की एक विस्तृत पट्टी का अनुमान लगाया गया है। राज्य में पाइराइट की एकमात्र खदान सलादीपुर (सीकर) है। बीकानेर जिले के लूणकरनसर में जैतून की रिफाइनरी स्थापित की जाती है। यह राजस्थान ओलिव कल्टीवेशन लिमिटेड द्वारा उत्पादित की जाने वाली देश की पहली रिफाइनरी है राजस्थान जैतून का तेल उत्पादन करने वाला देश का पहला राज्य है। सिरोही में चंद्रावती में खुदाई के दौरान पाए जाने वाले लाजवर्त पत्थर, यह पत्थर अफगानिस्तान में हिंदू कुश के पास बड़क

शाह की पहाड़ियों में पाया जाता है, यह अफगानिस्तान और चंद्रवती के बीच व्यापार को इंगित करता है। केयर्न इंडिया का दावा है कि गुड़ामालानी सांचोर में 1 ट्रिलियन क्यूबिक फीट गैस भंडार पाया गया है। बीकानेर जिले की खाजूवाला तहसील के आनंदगढ़ और फरीदसर इलाके में जिप्सम परत पाई गई है। फरवरी 2007 में बांसवाड़ा जिले के जगपुरा में ऑस्ट्रेलियाई कंपनी इंडो गोल्ड ने 85 मिलियन टन सोने के भंडार की खोज की राजस्थान के प्रमुख खनिज संसाधन इस प्रकार हैं।

**लीड-जस्ता:** सीसा और जस्ता मिश्रित अयस्कों की उत्पत्ति गैलेना से होती है। इसके अलावा कैलेमाइन, जिंकाइट, विलेमाइट मुख्य अयस्क हैं। उदयपुर में जावर खदान देश की सबसे बड़ी खदान है जिसमें सीसा जस्ता और चाँदी है। अन्य उत्पादक जिले भीलवाड़ा, अगुचा, राजसमंद में राजपुरा-दरीबा, सर्वाई माधोपुर में चैथ का बरवाड़ा है।

**तांबा :** झारखंड के बाद तांबा उत्पादन में राजस्थान का दूसरा स्थान है। खेतड़ी - सिंघाना (जिला झुंझुनू) तांबे के देश की सबसे बड़ी खदान है यहाँ, भारत सरकार उद्यम हिंदुस्तान कॉपर लिमिटेड स्थित है। राजस्थान में तांबे के अन्य उत्पादक क्षेत्र अलवर, प्रतापगढ़ और देलवाड़ा में सिरोही, केरावली में खो दरीबा हैं। कॉपर को पिघलाकर सल्फ्यूरिक एसिड को एक उत्पाद के रूप में प्राप्त किया जाता है। सुपर फॉस्फेट के निर्माण में उपयोग किया जाता है।

**टंगस्टन:** टंगस्टन ऊनफ्रेमाइट अयस्क से प्राप्त होता है। यह नागौर के डेगाना भकारी गाँव (रेवत पहाड़ी) में निर्मित होता है। टंगस्टन के अन्य उत्पादक क्षेत्र पाली में सिरोही, आबूरोड और नाना करब में बलदा हैं। राजस्थान राज्य टंगस्टन विकास निगम द्वारा बलौदा, सिरोही में खनन कार्य किया जा रहा है।

**मैंगनीज:** सिलोमेलिन, ब्रोनाइट, पायरोलुसाइट, मैंगनीज के मुख्य अयस्कों। बांसवाड़ा राजस्थान का सबसे अधिक कीमती जिला है यहाँ मैंगनीज का उत्पादन लिलवाना, तलवाड़ा, सागवा, तमसर, कलाबुता में किया जाता है। राजस्थान में अन्य उत्पादक क्षेत्र उदयपुर में देबारी, राजसमंद में स्वरूपपुरा, नगाडिया और नाथद्वारा हैं।

**लौह अयस्क:** हेमेटाइट, मैग्नेटाइट, लिमोनाइट मुख्य अयस्कों हैं। हेमेटाइट किस्म का लोहा राजस्थान में पाया जाता है। जयपुर राजस्थान का सबसे बड़ा मंजिला जिला है। प्रमुख लौह अयस्क उत्पादन क्षेत्र मोरिजा बानोल, चैमू और रामपुरा आदि हैं। लौह अयस्क के अन्य उत्पादक क्षेत्रों में उदयपुर में नाथरा का पाल, दौसा में थुर-हुंदारे, नीमला रायसेला, अलवर में राजगढ़, पुरवा में डबला- सिंघाना और झुंझुनू शामिल हैं।

**रॉक फॉस्फेट:** देश का 90 प्रतिशत रॉक फॉस्फेट राजस्थान में पाया जाता है। इस सुपर फास्फेट का उपयोग खाद और लवणीय मिट्टी के उपचार में किया जाता है। उदयपुर रॉक फॉस्फेट का सबसे बड़ा उत्पादक है, जिसमें झामर कोटरा, नीमच माता, बैलागढ़, कानपुरा, सिसारमा, भिंडर प्रमुख हैं। अन्य उत्पादक क्षेत्र जैसलमेर में बिरमानिया, लाठी, सीकर में कानपुरा, बांसवाड़ा में सालोपत हैं।

डक्क दद्वरर श्रडड जवजकं दद्वरर एक रॉक फॉस्फेट लरभकररी संयंत्र स्थापित कियर गयर है। फ्ररंस की सोफरर मैनिस ने एक रॉक फॉस्फेट ट्रीटमेंट प्लरंट स्थापित करने की सूचना दी है।

**चूना पत्थर:** इसकर उपयोग सीमेंट उद्योग, इस्पात और चीनी शोधन में कियर जतर है। यह ररजस्थरन में पयरर जरने वरलर सर्वव्यरपी खनिज है। चूना पत्थर तीन प्रकार के होते हैं।

- केमिकल ग्रेड जोधपुर, नरगौर
- स्टील ग्रेड सानू (जैसलमेर), उदयपुर
- सीमेंट ग्रेड चित्तौड़गढ़, नरगौर, बूंदी, बरंसवरडर, कोटर, झरलरवरड

अलवर में सबसे अधिक उत्पादन ररजगढ़, थरनरगरजी और चित्तौड़रह में भैंसररडगट निबोदेश मरंगरोल शंभपरर में होता है।

**अभ्रक:** ररजस्थरन झररखंड, आंध्र प्रदेश के बरद अभ्रक कर तीसरर स्थरन है। गैग्रेटाइट, पिगमेटाइट इसके दो मुख्य अयस्कौं हैं। सफेद अभ्रक को रुबी अभ्रक, गुलरबी अभ्रक को बरयोटाइट कहर जतर है। अभ्रक पारुडर के सरथ चरदरें बनरनर मरईनरइट कहरलरतर है। भीलवरडर में अभ्रक की ईट बनरई जतर है। भीलवरडर में सबसे अधिक अभ्रक उत्पादन होता है, दरंतर, तुनकर, फूलियर, शरहपुरर और प्रतरपपुरर मुख्य हैं। अभ्रक के अन्य उत्पादक क्षेत्र चंपरगुडर, सरवरगढ़, भगतपुरर और उदयपुर में एक छोटी ररशि, जयपुर, बूंदी, सीकर और डूंगरपुर में भी पार जते हैं।

**जिप्सम:** जिप्सम को सेलरवरडी, हरसरउंड और खडियर मिट्टी भी कहर जतर है। जिप्सम के ठंडर रूप को सेलेनित कहर जतर है। नरगौर में अधिकतम उत्पादन होता है जिसमें भदवरसी, मंगलोद, धनकोरियर प्रमुख हैं। अन्य उत्पादक क्षेत्रों में जरमसर (देश की सबसे बड़ी खरन), बीकरनेर में पुगल, बिसररसर, हरकसर, जैसलमेर में मोहनगढ़, चंदन, मखरनर, गंगरनगर में सूरतगढ़, तिलैयर में किशनपुरर और हनुमरनगढ़, पुरबरसर शरमिल हैं।

**बल्बस्टाइट :** यह केवल ररजस्थरन में खनन कियर जतर है। इसकर उपयोग पेंट, पेपर और सिरेमिक उद्योगों में कियर जतर है। सिरोही में मुख्य उत्पादन ख्यरलर, बैतकर में होता है। अन्य उत्पादक क्षेत्र अजमेर में रूपगढ़, पिसरगँव, उदयपुर में खेडर, डूंगरपुर में सरयरर और बोदकियर हैं।

**बेंटोनाइट:** इसकर उपयोग सिरेमिक बर्तनों, सौंदर्य प्रसरधन और वनस्पति तेलों पर पॉलिश करने में कियर जतर है। परनी में भीगने पर यह सूज जतर है। इसके उत्पादक क्षेत्रों में, बरडमेर में हरथी धरनी, गिरल, अकरली कर सर्वरधिक उत्पादन होता है। अन्य उत्पादन क्षेत्र बीकरनेर और सरवरईमरधोपुर हैं।

**फ्लोररइट यर फ्लोरस्पर:** इसकर उपयोग चीनी मिट्टी के बरतन, सफेद सीमेंट लोहे और एसिड उद्योगों में कियर जतर है। यह अभ्रक के सरथ एक उप- उत्पाद बन जतर है। डूंगरपुर में, मंडियों, कहरलर

का उत्पादन सबसे अधिक होता है। अन्य उत्पादक क्षेत्र जालौर, सीकर, सिरोही, अजमेर हैं। फुलपर बनेफिशियल प्लांट (1956) मंडियों के पाल में स्थापित है।

**पन्ना या हरी अग्नि या पन्ना या पन्ना:** उदयपुर में काला गुमान, तिखी, देवगढ़, राजसमंद में कांकरोली और अजमेर, राजगढ़ और बुबानी में गुड़ का उत्पादन किया जाता है। हाल ही में, यूके की खान प्रबंधन कंपनी ने बुबानी (अजमेर) से गामागुडा (राजसमंद) और नाथद्वारा के लिए ठीक-ठाक पृष्ठों की एक विशाल पट्टी का पता लगाया।

**सिरेमिक :** इसका उपयोग सिरेमिक और सिलिकेट उद्योगों में किया जाता है। उत्तर प्रदेश के बाद राजस्थान सिरेमिक उत्पादन में दूसरे स्थान पर है। चांदी, पलाना, बोताड़ी में बीकानेर का सबसे अधिक उत्पादन होता है। अन्य उत्पादक क्षेत्र उदयपुर में सवाईमाधोपुर, वसावा, पुरुषोत्तमपुरा, उदयपुर में तुषार और खोरा बैरिया में रायसीना हैं। सिरेमिक वाशिंग फैक्ट्री नीम का थाना (सीकर) में है।

**गार्नेट या तांबा या गार्नेट :** गार्नेट केवल राजस्थान में उत्पादित किया जाता है। गार्नेट मणि और अपघर्षक दो प्रकार के होते हैं। यह टॉक, कल्याणपुरा में राजमहल, कमलपुरा में भीलवाड़ा, दादिया, बलिया खेड़ा और अजमेर, बाराबारी में सरवर में उत्पादन किया जाता है।

**ग्रेनाइट :** राजस्थान देश का एकमात्र राज्य है जहाँ विभिन्न रंगों के ग्रेनाइट पाए जाते हैं। जालोर में सर्वाधिक ग्रेनाइट पाया जाता है। अन्य उत्पादक क्षेत्र हैं- पिक - बाबरमल (जालोर), बुध लाल सिवाना, गुंगेरिया (बाड़मेर), काला कालाडेरा (जयपुर), बदनबाड़ा और शमालिया (अजमेर), पीला पीतांबर ग्राम (जैसलमेर) और नवीनतम स्टोर बाड़मेर, अजमेर, दौसा में मिलते हैं।

**संगमरमर (संगमरमर):** भारत का 95 प्रतिशत संगमरमर राजस्थान में पाया जाता है। राजस्थान में कैल्सीटिक और डोलोमिटिक की दो किस्में पाई जाती हैं। राजसमंद संगमरमर के खनन में पहला स्थान रखता है। राजनगर, मोरवाड़, राजसमंद में मोरचाना, भगोरिया, सरदारगढ़ नाथद्वारा केलवा का उत्पादन किया जाता है। साथ ही ऋषभदेव, दरौली, जसपुरा, देवीमाता, नागौर में मकराना, उदयपुर में कुमारी डूंगरी, सेलवाड़ा शिवगंज में सेसिरा, सिरोही में भटाना, अलवर में खो दरीबा, राजगढ़, बड़ामपुर, बांसवाड़ा में त्रिपुर सुंदरी, कामतलाई, भीमकुंड, भीमकुंड में उत्पादन ऐसा होता है। राजसमंद सफेद कैलिसिटिक) मकराना, ग्रीन- ब्लैक डूंगरपुर, कोटा, ब्लैक भैंसलाना, लाल धौलपुर, गुलाबी - भरतपुर, ग्रीन (सर्पेन्टाइन) उदयपुर, लाइट ग्रीन डूंगरपुर, बादामी जोधुपर, येलो जैसलमेर, व्हाइट स्फटिक अलवर, लाल-पीली चित्तर जैसलमेर, सात रंग खंड्रा ग्राम (पाली), धारीदार जैसलमेर, संगमरमर की मंडी की मूर्तियां जयपुर, संगमरमर की जाली किशनगढ़, संगमरमर जैसलमेर।

**रजत:** भारत का 90 प्रतिशत चांदी राजस्थान में निकाला जाता है। अर्जेंटीना, जाइराइट, सींग सिल्वर चांदी के मुख्य अयस्क हैं। सीसा और जस्ता के साथ चांदी निकलती है। चांदी अयस्क का खनन डंडू (बिहार) में किया जाता है।

**HGT:** आनंदपुर भुकिया में, जगपुर, तिमारन माता, संजेला, मानपुर, दगोचा, उदयपुर रायपुर, खेतान, लाई, चित्तौड़गढ़ में खेड़ा गाँव, डूंगरपुर में चदर पाल, दौसा में अमजारा, बसारी, दौसा में नबावली, आनंदपुर भुकिया और राजस्थान के बांसवाड़ा में जगपुरा हिंदुस्तान जिंक लिमिटेड द्वारा खनन किया जा रहा है। हाल ही में अजमेर, अलवर, दौसा, सर्वाईमाधोपुर में नए स्वर्ण भंडार पाए गए हैं।

**यूरेनियम :** यूरेनियम एक आणविक खनिज है। पोटोमाइट्स, मोनोजाइट और चैरलाइट इसके मुख्य अयस्कों हैं। उमर उदयपुर में सबसे अधिक उत्पादन है। टॉक में देवली, सीकर में खंडेला, रोहिल, बूंदी में हिंडोली, भीलवाड़ा में जाहजपुर, भुंगास और नए स्टोर डूंगरपुर, किशनगढ़, बांसवाड़ा में पाए जाते हैं।

**कोयला :** तारशरी युग के कोयले की लिग्नाइट किस्म राजस्थान में पाई जाती है। कोयले के भंडार के मामले में तमिलनाडु के बाद राजस्थान का दूसरा स्थान है। राजस्थान में और उत्पादन में सबसे अधिक कोयला भंडार के साथ बाड़मेर जिले में पहले स्थान पर है। बाड़मेर में, बीकानेर में कपरडी, जालिया, गिरल, कसनू, गुढ़ा, पलाना में नागौर में बारसिंगार, चनेरी, बिठानुक, पनेरी, गंगा-सरोवर और सोनारी, मेदतारोड, नागियार में कोयले का उत्पादन किया जाता है।

**खनिज तेल :** खनिज तेल तलछटी चट्टानों में पाया जाता है। राजस्थान में बाड़मेर में तेल का सर्वाधिक भंडार है। बाड़मेर में गुड़ामालानी, कोसल, सिंधरी, मग्गा की धानी, हाथी की धानी प्रमुख उत्पादन क्षेत्र हैं। अन्य उत्पादक क्षेत्र सदुवाला, तनोट, मनिहारी टिब्बा, देवल, जैसलमेर, बीकानेर में बाघेवाला, हनुमानगढ़ में तुवारीवाला और नानूवाला हैं।

### राजस्थान में खनिज विकास:

1979 ई में राजस्थान में खनिज विकास निगम की स्थापना । राजस्थान राज्य टंगस्टन विकास निगम लिमिटेड में 22 नवंबर 1983 को स्थापित किया गया है। राज्य की पहली खनिज नीति 1978 में तत्कालीन मुख्यमंत्री भैरो सिंह शेखावत के अधीन बनाई गई थी। 1991 में दूसरी खनिज नीति बनाई गई। राजस्थान के खान और भू-विज्ञान निदेशालय ने राज्य में खनन क्षेत्र को विकसित करने के लिए "खनिज आधारित उद्योगों के लिए पर्यावरण के अनुकूल और उपयुक्त वातावरण विकसित करने के लिए सर्वोच्च प्राथमिकता, 2006 ई। सर्वोच्च प्राथमिकता शुरू की। राजपुरा- दरीबा बामनिया कला क्षेत्र को भारतीय भूवैज्ञानिक सर्वेक्षण विभाग द्वारा "भूवैज्ञानिक पार्क" के रूप में संरक्षित और संरक्षित किया गया है। राजस्थान की सबसे बड़ी खदान जावर खदान (उदयपुर) में है। राजस्थान में, पहली संगमरमर नीति अक्टूबर 1994 में घोषित की गई थी, और पहली ग्रेनाइट नीति 1991 ईस्वी थी। राजस्थान की नवीनतम संगमरमर नीति और ग्रेनाइट नीति की घोषणा 8 जनवरी 2002 को की गई। राजस्थान के खनिज विभाग ने 15 अगस्त 1999 को विजन 2020 घोषित किया। राजस्थान स्टेट माइंस एंड मिनरल्स लिमिटेड की स्थापना 2003 में की गई थी। राजस्थान

मिनरल्स लिमिटेड की स्थापना 2003 में की गई थी। राजस्थान में नई खनन नीति को 28 जनवरी, 2011 को राज्य मंत्रिमंडल द्वारा अनुमोदित किया गया था। राजस्थान पूरे देश में एकमात्र उत्पादक है,

जो जैस्पर, गार्नेट जैम और वोल्स्टेनाइट है राजस्थान पूरे देश में जैस्पर, गार्नेट जैम और वोलेस्टोनाइट का एकमात्र उत्पादक है। राज्य की नई खनिज नीति 4 जून 2015 को जारी की गई थी।

### राजस्थान राज्य खनिज विकास निगम

27 सितंबर 1979 को कंपनी अधिनियम 1956 के तहत स्थापित, इसे 20 फरवरी 2003 को राजस्थान स्टेट माइंस एंड मिनरल्स लिमिटेड के साथ मिला दिया गया था। राजस्थान राज्य खान एवं खनिज लिमिटेड इसकी स्थापना 1948 में बीकानेर जिप्सम लिमिटेड नाम से हुई थी। 1974 में इसका नाम बदलकर राजस्थान स्टेट माइंस एंड मिनरल्स लिमिटेड कर दिया गया था। उदयपुर के झामड़ कोटरा में रॉक फॉस्फेट का कार्य गिरल बाडमेर में 125 मेगावाट बिजली संयंत्र की स्थापना जैसलमेर के बाराबाग में 106.3 मेगावाट बिजली इकाई की स्थापना राजस्थान स्टेट माइंस एंड मिनरल्स लिमिटेड और नेशनल केमिकल एंड फर्टिलाइज़र ने चित्तौड़ गढ़ में 425 करोड़ रुपये की लागत से राजस्थान नेशनल केमिकल एंड फर्टिलाइज़र लिमिटेड की डीएपी उर्वरक फैक्ट्री स्थापित की है।

### निष्कर्ष

राजस्थान खनिजों से समृद्ध राज्य है। राजस्थान राज्य 79 खनिज किस्मों से समृद्ध है, जिनमें से 58 खनिजों का व्यावसायिक रूप से दोहन किया जा रहा है। सीसा-जस्ता, वोलास्टोनाइट, जिप्सम, कैल्साइट, चांदी, रॉक-फॉस्फेट जैसे प्रमुख खनिजों और वोलास्टोनाइट, जैस्पर, फ्लोराइट, जिप्सम, सैंडस्टोन, संगमरमर आदि जैसे अन्य खनिजों के निर्माण में राजस्थान का प्रभावी प्रभुत्व है, जो राष्ट्रीय उत्पादन में लगभग 90% से 100% योगदान देता है। कच्चे तेल, भारी तेल, प्राकृतिक गैस आदि के विशाल भंडार राज्य की खनिज ताकत में और इजाफा करते हैं। सीसा-जस्ता और तांबे के उत्पादन में राजस्थान का उल्लेखनीय योगदान है। ओएनजीसी द्वारा बाडमेर और जैसलमेर जिलों में तेल और प्राकृतिक गैस के भंडार पाए जाते हैं। बाडमेर-सांचोर बेसिन में 25 तेल और गैस क्षेत्रों में कुल लगभग 480 मिलियन टन तेल भंडार का अनुमान लगाया गया है। राजस्थान में कोयले के भंडार की बहुत कमी है। राजस्थान में लिग्नाइट कोयला बहुत कम मात्रा में पाया जाता है। राज्य में खनिज के क्षेत्र में भौतिक, आर्थिक, तकनीकी आदि विभिन्न समस्याएं हैं। इसलिए केन्द्र और राज्य सरकार को राज्य में खनिज क्षेत्र की समस्याओं के समाधान के लिए सचेत होना चाहिए।

### संदर्भ ग्रन्थ सची:-

1. राजस्थान का भूगोल प्रोफेसर एच एस शर्मा, पंचशील प्रकाशन, जयपुर
2. राजस्थान की अर्थव्यवस्था, प्रोफेसर लक्ष्मी नारायण नाथूराम, कॉलेज बुक हॉउस, जयपुर
3. राजस्थान का भूगोल, डॉ हरिमोहन सक्सेना,
4. राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, जयपुर



5. राजस्थान सुजस, त्रिमासिक पत्रिका, राजस्थान सरकार, जयपुर
6. राजस्थान राज्य औद्योगिक विकास व विनियोग निगम लिमिटेड (RIICO)
7. सूचना एवं जन संचार प्रौद्योगिकी विभाग, राजस्थान सरकार, जयपुर
8. राजस्थान खनिज विकास निगम, जयपुर।
9. खान एवं पर्यावरण विभाग, राजस्थान सरकार।
10. भल्ला, एल.आर., "राजस्थान का भूगोल", कुलदीप पब्लिशिंग हाउस, 2015, जयपुर।
11. भारद्वाज, रजत, "जिप्सम: बीकानेर के संसाधन और नए संभावित क्षेत्र", इंटरनेशनल जर्नल ऑफ साइंटिफिक एंड रिसर्च पब्लिकेशंस, खंड 06, अंक 02, फरवरी 2016, पृ. 68-72।
12. चक्रवर्ती, लेखा, "भारत में खनन क्षेत्र का पुनरुद्धार: कानून और रॉयल्टी व्यवस्था का विश्लेषण", वर्किंग पेपर संख्या 2014-129, राष्ट्रीय लोक वित्त और नीति संस्थान, जनवरी 2014, नई दिल्ली।
13. चौल्या, एस.के. और मिश्रा, पी.के. और अन्य, "भारतीय कोयला खनन उद्योग का आधुनिकीकरण: विजन 2025", जर्नल ऑफ साइंटिफिक एंड इंडस्ट्रियल रिसर्च, खंड 67, जनवरी 2008, पृ. 28-35
14. आर्थिक समीक्षा 2015-16 (डीईएस, जयपुर) अंग्रेजी।